

CEDSI TIMES

Your Skilling Partner...

कोल्हापुर, सांगली और सतारा में डेयरियां भारी वर्षा के बीच निर्बाध दूध संग्रह सुनिश्चित करती हैं



चूंकि यह क्षेत्र भारी बारिश से जूझ रहा है, कोल्हापुर, सांगली और सतारा जिलों में डेयरियां यह सुनिश्चित करने के लिए व्यापक उपाय कर रही हैं कि डेयरी किसानों से दूध का संग्रह निर्बाध रहे। जलभराव के कारण 120 से अधिक सड़कें बंद हो गई हैं और घाट क्षेत्रों के कई गांव पहुंच से बाहर हो गए हैं, डेयरी उद्योग को एक चुनौतीपूर्ण स्थिति का सामना करना पड़ रहा है।

इन जिलों में दूध उत्पादन राज्य के डेयरी उद्योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसका लगभग 95% उत्पादन मुंबई और आसपास के क्षेत्रों में पहुंचाया जाता है। प्रतिकूल मौसम की स्थिति के बावजूद, डेयरियां बाजार की मांगों को पूरा करने के लिए नियमित संग्रह और आपूर्ति श्रृंखला बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

चूँिक क्षेत्र के किसानों को लगातार बारिश और जलजमाव वाली सड़कों के कारण किठनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, डेयरी क्षेत्र की लचीलापन चमक रही है। डेयरियों के सिक्रय प्रयास और संचार नेटवर्क चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद डेयरी किसानों का समर्थन करने और दूध आपूर्ति की निरंतरता सुनिश्चित करने के प्रति उनके समर्पण को प्रदर्शित करते हैं।

नई मुख्यमंत्री सुधारित कामधेनु योजना गोवा के डेयरी किसानों को सशक्त बनाती है



डेयरी फार्मिंग को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी प्रगति को अपनाते हुए, गोवा मवेशियों की खरीद के लिए मौजूदा कामधेनु योजना की जगह, मुख्यमंत्री सुधारित कामधेनु योजना को लागू करने के लिए पूरी तरह तैयार है। इस नई पहल का उद्देश्य संकर नस्ल की गायों, उन्नत भैंसों और साहीवाल, सीर, रेड सिंधी, राठी और थारपारकर जैसी स्वदेशी नस्लों तक पहुंच प्रदान करके डेयरी किसानों को सशक्त बनाना है।

मुख्यमंत्री सुधारित कामधेनु योजना के तहत, कुशल प्रबंधन और ट्रैकिंग सुनिश्चित करते हुए, रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (आरएडी) ईयर टैग के माध्यम से जानवरों की विशिष्ट पहचान की जाएगी। किसान के पशु शेड में पहुंचने पर, जानवरों की माइक्रोचिपिंग की जाएगी, और मौजूदा गायों और भैंसों की पहचान माइक्रोचिप और INAPH ईयर टैग द्वारा की जाएगी, जिसमें INAPH पशु उत्पादकता और स्वास्थ्य के लिए सूचना नेटवर्क को दर्शाता है।

वैज्ञानिक मवेशी शेड निर्माण को अपनाने को प्रोत्साहित करने के लिए, योजना में प्रति वर्ग मीटर क्षेत्रफल वाले पात्र मवेशी शेडों के लिए निर्माण लागत का 80% सब्सिडी देने का प्रस्ताव है। इसका उद्देश्य मवेशियों के लिए कुशल और स्वच्छ आश्रय स्थल बनाना, उनकी भलाई और उत्पादकता को बढ़ाना है।

एनडीडीबी में सतत पशुधन परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू



एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने ग्रह पर सभी जीवित प्रणालियों की परस्पर निर्भरता और पारिस्थितिकी तंत्र की गड़बड़ी के गहरे प्रभाव पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी भारत के 020 प्रेसीडेंसी विषय, "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" के अनुरूप है, जो एक स्थायी भविष्य के लिए वैश्विक सहयोग को अपनाता है।

अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के बीच गहन चर्चा और सहयोग के माध्यम से, संगोष्ठी का उद्देश्य पशुधन क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव को बढ़ावा देना और सभी के लिए एक स्थायी, सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करना है।

आनंद में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) ने केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री परषोत्तम रूपाला द्वारा स्थायी पशुधन परिवर्तन पर एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। दो दिवसीय संगोष्ठी संयुक्त रूप से 020 के कृषि कार्य समूह (एडब्ल्यूजी) के तहत पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी), मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार, एनडीडीबी और संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा आयोजित की जाती है।

आरबीआई डेयरी किसान ऋण के लिए दूध आपूर्ति डेटा का उपयोग करता है



रिज़र्व बैंक इनोवेशन हब ने एक अभूतपूर्व "घर्षण रिहत क्रेडिट" प्लेटफ़ॉर्म पेश किया है, जो डेयरी किसानों को क्रेडिट इतिहास के बिना भी, आसानी से बैंक ऋण प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। प्लेटफ़ॉर्म उधारकर्ता की पुनर्भुगतान क्षमता निर्धारित करने के लिए अमूल जैसी डेयरी सहकारी सिमितियों को बेचे गए दूध आपूर्ति डेटा और राज्य सरकारों के पास उपलब्ध भूमि रिकॉर्ड का उपयोग करता है।

प्रारंभ में कृषि और डेयरी ऋणों के लिए डिज़ाइन की गई इस पहल का उद्देश्य शिक्षा ऋण (डिजी लॉकर का उपयोग), एमएसएमई ऋण (लध्यम पंजीकरण, जीएसटी और कर रिकॉर्ड के आधार पर), वाहन ऋण और व्यक्तिगत ऋण तक विस्तार करना है। परीक्षण के नतीजे बताते हैं कि ऋण अब 10 मिनट से भी कम समय में स्वीकृत किया जा सकता है, जिससे ऋण आवेदन प्रक्रिया एक सप्ताह लंबी प्रक्रिया से बदल गई है, जिसमें ऋण राशि का लगभग 6% खर्च होता है।

आरबीआई के एक अधिकारी ने कहा, "यह ऋण देने के लिए ओएनडीसी के बराबर होगा। बैंक ऋण देने पर निर्णय लेने के लिए कई स्रोतों से डेटा प्राप्त करने में सक्षम होंगे।" प्लेटफ़ॉर्म एक ऐप-आधारित प्रणाली के माध्यम से संचालित होता है, जो उधारकर्ताओं और बैंक अधिकारियों दोनों के लिए सुलभ है। बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण उधारकर्ताओं की साख की पृष्टि करता है, जिससे त्वरित ऋण सहमित और संवितरण संभव होता है। कृषि ऋण के लिए, बैंक पैन, मतदाता पहचान पत्र, या अन्य सरकार द्वारा जारी आईडी कार्ड का उपयोग करते हैं, जो ऋण अनुमोदन की प्रक्रिया के लिए डिजीटल बैंक रिकॉर्ड के साथ जुड़े होते हैं।

वर्तमान में, पांच राज्य इस पहल का हिस्सा हैं, और अधिक राज्यों के शामिल होने की उम्मीद है। यह प्लेटफॉर्म वर्तमान में डेयरी ऋण के लिए अमूल के 30 मिलियन किसानों के डेटाबेस तक पहुंचता है। इसके अतिरिक्त, बैंक साख का आकलन करने के लिए उपग्रह डेटा या मृदा स्वास्थ्य रिपोर्ट का अनुरोध कर सकते हैं, भूमि जोत को ध्यान में रखते हुए, नाबार्ड द्वारा विकसित फॉर्मूले के आधार पर गेहूं, धान या मक्का जैसी फसलों की खेती के लिए ऋण तैयार कर सकते हैं।

परियोजना को शुरुआत में चुनौतियों का सामना करना पड़ा, क्योंकि बैंकों को भूमि रिकॉर्ड विवरण, केवाईसी, क्रेडिट स्कोर और अन्य डेटा को एकीकृत करने के लिए अपनी ऋण उत्पत्ति प्रणालियों में सुधार करने की आवश्यकता थी। राज्यों के साथ अलग-अलग गठजोड़ को सुव्यवस्थित करने से जटिलता और बढ़ गई।

पश्चिम बंगाल सरकार ने हरिन्घाटा में 65 करोड़ रुपये की ग्रीनफील्ड आधुनिक डेयरी परियोजना शुरू की

डेयरी क्षेत्र को महत्वपूर्ण बढ़ावा देने के लिए, पश्चिम बंगाल सरकार ने नादिया जिले के हिरनघाटा में 65-48 करोड़ रुपये मूल्य की एक अत्याधुनिक ग्रीनफील्ड आधुनिक डेयरी परियोजना शुरू की है। यह परियोजना, 1970 के दशक से एक अग्रणी प्रयास है, जिसे राज्य सरकार के पशु संसाधन विभाग के तहत बांग्लार डेयरी लिमिटेड की ओर से पश्चिम बंगाल पशुधन विकास निगम लिमिटेड (डब्ल्यूबीएलडीसीएल) द्वारा क्रियान्वित किया जाना है।



आइस मेक रेफ्रिजरेशन लिमिटेड को परियोजना की देखरेख के लिए टर्नकी अनुबंध से सम्मानित किया गया है, जिसमें 1.5 लाख लीटर दूध की प्रसंस्करण क्षमता के लिए सिविल, मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल कार्य का डिजाइन, आपूर्ति, स्थापना और कमीशनिंग शामिल है। हालाँकि, प्रारंभिक चरण में प्रति दिन एक लाख लीटर दूध का प्रसंस्करण किया जाएगा, जिसमें ताजे दूध और मूल्य वर्धित दूध उत्पादों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। यह परियोजना सार्वजनिक क्षेत्र के डेयरी क्षेत्र में एक उल्लेखनीय प्रगति का प्रतिनिधित्व करती है, जो कई दशकों के बाद एक महत्वपूर्ण अंतर को भरती है।

डब्ल्यूबीएलडीसीएल के प्रबंध निदेशक, गौरी शंकर कोनेर ने उद्यम के लिए उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, "सितंबर 2024 तक वाणिज्यिक उत्पादन की उम्मीद है।" उन्होंने राज्य के बढ़ते डेयरी क्षेत्र की जरूरतों को पूरा करने में परियोजना के महत्व पर प्रकाश डाला।

आइस मेक के सीएमडी, चंद्रकांत पटेल ने इस महत्वपूर्ण परियोजना में कंपनी की भूमिका की सराहना की, जो उनके सबसे बड़े ऑर्डर का प्रतीक है। उन्होंने पश्चिम बंगाल में "ICEBEST" विनिर्माण सुविधा की सफल शुरुआत को रेखांकित करते हुए, विभिन्न उत्पादों और व्यावसायिक क्षेत्रों में आइस मेक की निरंतर बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि पर जोर दिया।

पशुपालन विभाग ने गुलाबगढ़-पद्दर में मेगा जागरूकता शिविर का आयोजन किया

पशुपालन और डेयरी विभाग DEPARTMENT OF ANIMAL HUSBANDRY AND DAIRYING पशुपालन विभाग किश्तवाड़ ने गुलाबगढ़-पद्दर में जागरूकता शिविर आयोजित किया। इस आयोजन में मिहला किसानों सिहत 200 से अधिक पशु प्रजनकों की सिक्रिय भागीदारी देखी गई, और इसे गहन चर्चाओं और मूल्यवान इनपुट द्वारा चिह्नित किया गया। मुख्य पशुपालन अधिकारी, डॉ. संजय कुमार सेन के नेतृत्व में, शिविर प्रतिभागियों को एकीकृत डेयरी विकास योजना (आईडीडीएस) और गहन पोल्ट्री विकास कार्यक्रम (आईपीडीपी) सिहत विभाग की चल रही समग्र कृषि विकास योजना और प्रमुख योजनाओं के बारे में शिक्षित करने के लिए एक आवश्यक मंच साबित हुआ।

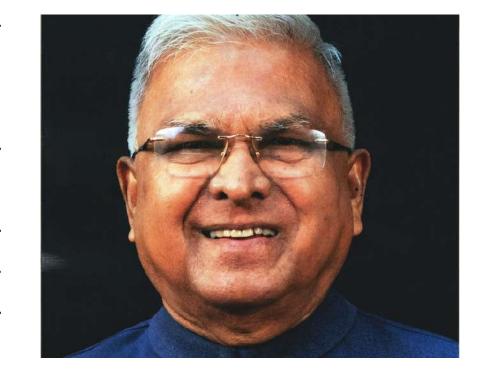
डॉ. सेन ने शिक्षित बेरोजगार युवाओं को इन योजनाओं का लाभ उठाने के लिए उत्साहपूर्वक प्रोत्साहित किया ताकि वे न केवल अपने लिए आजीविका के अवसर पैदा कर सकें बल्कि अपने समुदायों की आर्थिक वृद्धि में भी योगदान दे सकें। प्रतिभागियों को स्थानीय मवेशियों की नस्लों के आनुवंशिक उन्नयन के लिए कृत्रिम गर्भाधान (जमे हुए वीर्य प्रौद्योगिकी) और सेक्स सॉर्टेड वीर्य (एसएसएस) योजना के लाभों के बारे में भी बताया गया। शिविर में कृत्रिम गर्भाधान के लिए नजदीकी पशु चिकित्सा केंद्रों में सेक्स सॉर्टेड फ्रोजन वीर्य तकनीक की उपलब्धता पर भी प्रकाश डाला गया, जो स्थानीय दूध उत्पादन को बढ़ाने में योगदान दे रहा है।

गांव के जन प्रतिनिधियों ने समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने में विभाग के प्रयासों की गहरी सराहना की और विभिन्न योजनाओं के तहत दिए जाने वाले लाभों को प्राप्त करने में पूर्ण सहयोग का वादा किया। उन्होंने विभाग से क्षेत्र में निरंतर प्रगति को बढ़ावा देने के लिए भविष्य में भी इसी तरह के शिविर आयोजित करने का आग्रह किया।

किसानों को उनके पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता को अनुकूलित करने में सहायता करने के लिए, आयोजन के दौरान मुफ्त दवाएं, खनिज मिश्रण, कैल्शियम की खुराक, कृमिनाशक, टीकाकरण और सामान्य उपचार प्रदान किए गए। किसानों को विभाग द्वारा दी जाने वाली विभिन्न लाभकारी योजनाओं, जैसे किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) और पशुधन बीमा से भी परिचित कराया गया, जिससे पशुपालन के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिला।

सरकारी योजनाओं का उद्देश्य जरूरतमंदों का उत्थान करना है: राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने वन और पशुपालन विभाग की गतिविधियों की समीक्षा की

राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने राजभवन के सांदीपनि सभागार में वन एवं पशुपालन विभाग की विभागीय गतिविधियों की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में वन मंत्री कुँवर विजय शाह, आदिवासी प्रकोष्ठ के अध्यक्ष दीपक खांडेकर और संबंधित विभागों के विरष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। जरूरतमंदों के उत्थान के लिए सरकार की प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए, राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने अधिकारियों से लक्षित समुदायों और क्षेत्रों के वंचित और वंचित परिवारों को प्राथमिकता देते हुए, समान इरादे से योजनाओं को लागू करने का आग्रह किया। उन्होंने योजना के लक्ष्यों को समर्पण और भावना के साथ पूरा करने की दिशा में काम करने के महत्व पर जोर दिया, जिससे उन्हें प्रभावी निगरानी का आधार बनाया जा सके। राज्यपाल ने कहा कि वंचितों की मदद करने से मिलने वाली खुशी और तृप्ति की भावना एक दिव्य अनुभूति प्रदान करती है।



बैठक के दौरान राज्यपाल ने मुख्यमंत्री दुधारू पशु योजना (मुख्यमंत्री डेयरी पशु योजना) के तहत वितरित दुधारू पशुओं की उत्पादकता के बारे में जानकारी ली। विशेष पिछड़ी जनजातियों बैगा, सहरिया और भारिया के लिए स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने के उद्देश्य से इस योजना से राज्य के 14 जिलों के 742 परिवारों को लाभ हुआ है। पशुपालकों को प्रतिदिन 10 से 12 लीटर दूध देने में सक्षम दुधारू पशु मिले हैं।

राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने अन्य क्षेत्रों में पेसा अधिनियम के तहत ग्राम सभाओं को दिए गए अधिकारों के सफल अभ्यास को व्यापक रूप से प्रचारित करने के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने इन अधिकारों के उपयोग के लाभों को समझाते हुए अन्य ग्राम सभाओं को भी इसका पालन करने के लिए प्रेरित किया। वन मंत्री कुँवर विजय शाह ने वन समिति को निकाली गई लकड़ी के बिक्री मूल्य पर 20% लाभांश प्रदान करने और जैव विविधता संरक्षण के लिए वृक्षारोपण में 50% वन उपज प्रजातियों को लगाने की मध्य प्रदेश की अग्रणी पहल पर प्रकाश डाला।

पेसा अधिनियम के तहत 20 जिलों की 268 ग्राम सभाओं ने तेंदू पत्ता संग्रहण के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। 7.31 करोड़ रुपये मूल्य के कुल 13,363 मानक बोरा का संग्रहण किया गया है, जिसमें 4 करोड़ रुपये पारिश्रमिक के रूप में वितरित किये गये हैं। इसके अतिरिक्त, प्रोत्साहन के रूप में 3.19 करोड़ रुपये आवंटित किए जाएंगे।

22nd July 2023 **CEDSI Times**

शीर्षक: दूध उत्पादकता बढ़ाना: सीईडीएसआई के सहयोग से इष्टतम नस्ल चयन

परिचय:

दूध उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारकों पर अपनी श्रृंखला जारी रखते हुए, हम अपना ध्यान नस्ल चयन पर केंद्रित करते हैं। दूध उत्पादन और समग्र डेयरी फार्म लाभप्रदता को अधिकतम करने के लिए मवेशियों की सही नस्ल का चयन करना महत्वपूर्ण है। भारत में डेयरी कौशल उत्कृष्टता केंद्र (सीईडीएसआई) इष्टतम नस्ल चयन के महत्व को पहचानता है और इस संबंध में किसानों को अपना समर्थन प्रदान करता है। इस ब्लॉग में, हम नस्ल चयन के महत्व पर प्रकाश डालेंगे, भारत में वर्तमान परिदृश्य का पता लगाएंगे, सूचित निर्णयों को बढ़ावा देने में सीईडीएसआई की भूमिका पर प्रकाश डालेंगे और नस्ल चयन और दूध उत्पादकता के बीच अंतर्संबंधों पर चर्चा करेंगे।



नस्ल चयन और दूध उत्पादकता के बीच संबंध:

मवेशियों की नस्ल का दूध उत्पादकता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। विभिन्न नस्लें दूध की उपज, वसा की मात्रा, प्रोटीन की मात्रा, स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल होने की क्षमता और रोग प्रतिरोधक क्षमता में भिन्नता प्रदर्शित करती हैं। सही नस्ल का चयन यह सुनिश्चित करता है कि किसान दूध उत्पादन और लाभप्रदता को अधिकतम कर सकते हैं।

नस्ल और उत्पादकता पर राज्य-वार डेटा (2023 तक)

राज्य	प्रमुख नस्ल	दूध उत्पादकता (औसत दैनिक उपज)
आंध्र प्रदेश	ओंगोल	6-8 लीटर
गुजरात	गियर	8-12 लीटर
हरियाणा	साहीवाल	8-12 लीटर
कर्नाटक	हल्लीकर	6-8 लीटर
महाराष्ट्र	जर्सी	10-14 तीटर
पंजाब	होल्स्टीन-फ्रीसियन	25-30 लीटर
राजस्थान	थारपारकर	8-12 लीटर
तमिलनाडु	कांगायम	6-8 लीटर
उत्तर प्रदेश	मुर्रा भैंस	8-12 लीटर
पश्चिम बंगाल	लाल सिंधी	6-8 लीटर





सूचित निर्णयों को बढ़ावा देने में सीईडीएसआई की भूमिका

सीईडीएसआई सूचित नस्ल चयन के महत्व को पहचानता है और किसानों को विभिन्न नस्लों की विशेषताओं और उत्पादकता के बारे में शिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से, सीईडीएसआई किसानों को उनकी विशिष्ट कृषि स्थितियों और उद्देश्यों के आधार पर सूचित निर्णय लेने के लिए ज्ञान और संसाधन प्रदान करता है।



सीईडीएसआई नस्ल चयन के दौरान विचार करने के लिए विभिन्न कारकों पर मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिसमें दूध उपज क्षमता, स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूलता, रोग प्रतिरोध और समग्र झुंड प्रबंधन शामिल है। इससे किसानों को ऐसी नस्लों का चयन करने में मदद मिलती है जो उनके लक्ष्यों के अनुरूप हों और दूध उत्पादकता को अनुकूलित करें।

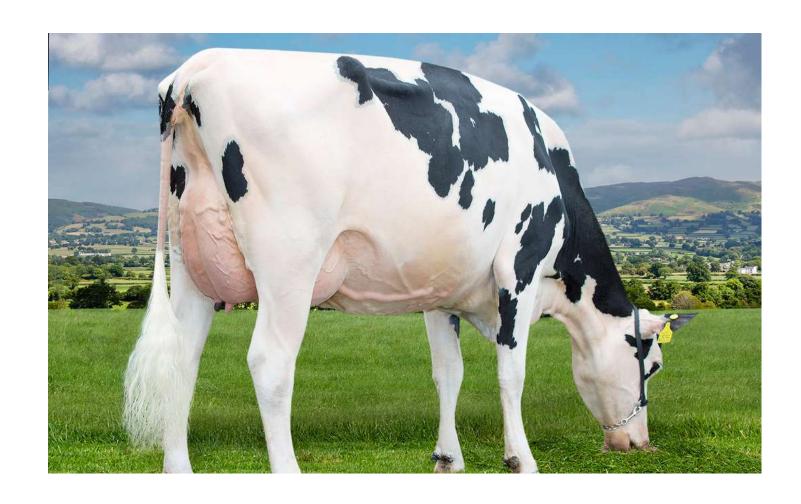


इसके अलावा, सीईडीएसआई नस्ल सुधार कार्यक्रमों और पहलों तक पहुंच प्रदान करता है। ये कार्यक्रम स्वदेशी नस्लों की गुणवत्ता और उत्पादकता में सुधार के लिए चयनात्मक प्रजनन, आनुवंशिक वृद्धि और कृत्रिम गर्भाधान तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वैज्ञानिक प्रगति का लाभ उठाकर, सीईडीएसआई किसानों को अपने झुंड की आनुवंशिक क्षमता और समग्र दूध उत्पादकता बढ़ाने के लिए सशक्त बनाता है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः, डेयरी फार्मिंग में दूध उत्पादकता को अधिकतम करने के लिए नस्ल चयन एक महत्वपूर्ण कारक है। विभिन्न नस्लों की विशेषताओं और उत्पादकता को समझने से किसानों को सूचित निर्णय लेने में मदद मिलती है। शिक्षा के माध्यम से सूचित नस्ल चयन को बढ़ावा देने, नस्ल सुधार कार्यक्रमों तक पहुंच और विशेषज्ञों के साथ सहयोग में सीईडीएसआई की भूमिका किसानों को दूध उत्पादकता के अनुकूलन में काफी मदद करती है। सही नस्ल का चयन करके और प्रभावी प्रबंधन प्रथाओं को लागू करके, किसान उच्च दूध उपज, बेहतर नस्ल विशेषताओं और अपने डेयरी संचालन में समग्र स्थिरता प्राप्त कर सकते हैं।







सूचना

सीईडीएसआई द्वारा राजस्थान में प्राथमिक दुग्ध उत्पादकों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम!

सीईडीएसआई राजस्थान में प्राथमिक दूध उत्पादकों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से एक विशेष कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम की घोषणा करते हुए रोमांचित है। संबद्ध डेयरी और दूध उत्पादक संघों के पास अपने सदस्यों को संपूर्ण डेयरी खेती और पशुपालन प्रथाओं को कवर करने वाला व्यापक 3-दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान करने का एक अनूठा अवसर है। कार्यक्रम में मवेशियों की नस्ल, चारा प्रबंधन, पशु स्वास्थ्य, प्रजनन, दूध की गुणवत्ता और फार्म प्रबंधन जैसे आवश्यक विषयों को शामिल किया जाएगा। प्रतिभागियों को अपने डेयरी संचालन को बढ़ाने के लिए गहन ज्ञान और व्यावहारिक कौशल प्राप्त होंगे।

इसके अलावा, दूध उत्पादकों का मूल्यांकन किया जाएगा और कार्यक्रम के सफल समापन पर उन्हें औपचारिक प्रमाणन प्राप्त होगा। यह प्रमाणीकरण एक मान्यता प्राप्त प्रमाण पत्र के रूप में काम करेगा, जिससे उन्हें अपने डेयरी व्यवसाय का विस्तार करने और हितधारकों के बीच विश्वास बनाने में सहायता मिलेगी।

सीईडीएसआई कार्यक्रम का खर्च वहन करेगा, जबिक संबद्ध डेयरी या निर्माता संघ प्रशिक्षण स्थल, प्रतिभागियों और प्रशिक्षण सहायता की व्यवस्था करेंगे। प्रत्येक बैच अधिकतम 25-30 किसानों को समायोजित कर सकता है, जिससे व्यक्तिगत ध्यान और केंद्रित शिक्षा सुनिश्चित होती है। बड़ी संख्या में दूध उत्पादकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए दो बैचों का आयोजन किया जा सकता है। यदि आपका डेयरी या उत्पादक संघ इस कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से अपने संबद्ध दूध उत्पादकों के उत्थान और सशक्तिकरण में रुचि रखता है, तो इस अवसर को न चूकें!



Centre of Excellence for Dairy Skills in India

Join Our Membership Drive and Get Benefits of

- Platform to interact with other members in the sector
 - Networking opportunities with corporate leaders and government authorities
- Special costs of training in Skill India Certified Programmes
- Access to our Journal and Publications
- Expert advice in day-to-day operations and management of livestock /farm productions
- Free registration on the job portal and regular updates on job vacancies in the sector

- Recognize your organization with CEDSI Yearly Awards and Recognition
- Chance to reach across the board through advertising in our press releases, news and articles
- Consultative and advisory services to help members
- Consulting and advisory services to help members
- Periodic e-newsletter for the latest news, govt. announcement and schemes in dairy sectors
- Updates on training programs of CEDSI and access to the training calendar

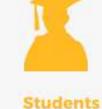
Who Can Become a Member -







Dairy Farmers





Professional

हम कौन हैं?

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत भारतीय कृषि कौशल परिषद (ASCI) के तत्वावधान में काम करने वाली एक स्वायत्त संस्था "भारत में डेयरी कौशल के लिए उत्कृष्टता केंद्र (CEDSI)", किसानों की आजीविका के सशक्तिकरण और बेहतरी में मदद करने के लिए, वेतनभोगी कर्मचारी, और डेयरी मूल्य श्रृंखला में अन्य हितधारक।

सीईडीएसआई सदस्यता उद्योग के नेताओं, नीति निर्माताओं, विकास चिकित्सकों, डेयरी वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, छात्रों और किसानों को डेयरी उद्योग के लिए आसन्न महत्व के मुद्दों पर बहस और चर्चा करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करेगी।

















CEDSI : रविविंग स्किल्स एंड जनरेटिंग लाइवलीहुड

किसानों/छात्रों/उद्यमियों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- डेयरी किसान / उद्यमी
- डेयरी फार्म पर्यवेक्षक
- डेयरी कार्यकर्ता
- पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता
- कृत्रिम गभिधान तकनीशियन
- पशु चिकित्सा क्षेत्र सहायक
- पशु चिकित्सा नैदानिक सहायक

- बछड़ा पालन
- कृषि उपकरण तकनीशियन
- डेयरी फार्म अर्थशास्त्र और प्रबंधन
- उद्योग संरेखित प्रमाणन कार्यक्रम (बेरोजगार युवा और छात्र)

एफपीओ उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम

- उत्पाद प्रौद्योगिकी और प्रक्रियाओं पर एफपीओ सदस्य अभिविन्यास।
- एफपीओ मार्केट लिंकेज
- एफपीओ शासन
- एफपीओ लेखा

डेयरी कॉरपोरेट्स और सहकारी समितियों के लिए प्रमुख कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- चिलिंग प्लांट तकनीशियन
- बल्क मिल्क कूलर ऑपरेटर
- ग्राम स्तरीय दुग्ध संग्रह केन्द्र पर्यवेक्षक
- दूध परीक्षक
- ग्रीन हाउस गैसों का शमन
- दूध की गुणवत्ता आश्वासन
- मिल्क डिलीवरी बॉय

- दूध खरीद और इनपुट पर्यवेक्षक
- डेयरी उद्योग में अपशिष्ट प्रबंधन
- चारा और चारा प्रबंधन
- स्वच्छ दूध उत्पादन
- निर्णय समर्थन प्रणाली / डेटा विश्लेषिकी